

तिरंगे की भावना को नमन

नई दिल्ली, भारत
अगस्त 2025

परिचय

- इतिहास साक्षी रहा है कि भारत के नागरिकों की समवेत चेतना ने तिरंगे को आत्माभिव्यक्ति और स्वतंत्रता की खोज का एक महत्वपूर्ण माध्यम माना है।
- इस प्रदर्शनी के द्वारा तिरंगे के सार, उसके विकास, और आधुनिक भारत को आकार देने में उसकी महत्ता को तीन अलग-अलग माध्यमों के ज़रिये दिखाने का प्रयास किया गया है।

तिरंगे का विचार और उसका विकास

भारतीय स्वतंत्रता संग्राम में तिरंगे की भूमिका

हर घर तिरंगा अभियान

भाग

एक

तिरंगे का विचार और
उसका विकास

तिरंगे के विकास की कहानी

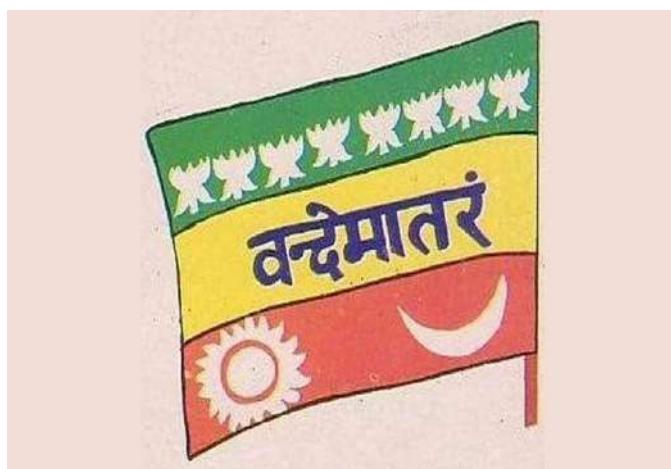
- जुलाई 1906: सुकुमार मित्रा और सचिन्द्र प्रसाद बसु ने बायकॉट झंडे की रचना की, जिसे वंदे मातरम् झंडा भी कहा जाता है।



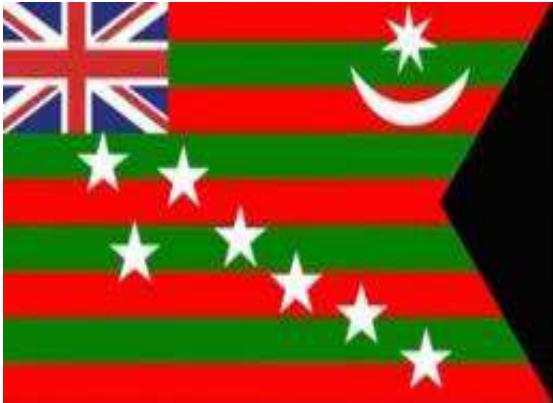
1906 में तिरंगे का डिजाइन

- इस झंडे में तीन रंग थे, हरा, पीला और लाल जिस पर संस्कृत में वंदे मातरम् लिखा हुआ था।
- इसके हरे रंग की पट्टी में आठ कमल के फूल बने थे और लाल पट्टी में सूर्य और चंद्रमा को दर्शाया गया था।
- यह झंडा पहली बार स्वदेशी और बहिष्कार आंदोलन के दौरान कोलकाता के पारसी बागान स्क्वायर पर फहराया गया था। (7 अगस्त 1906)

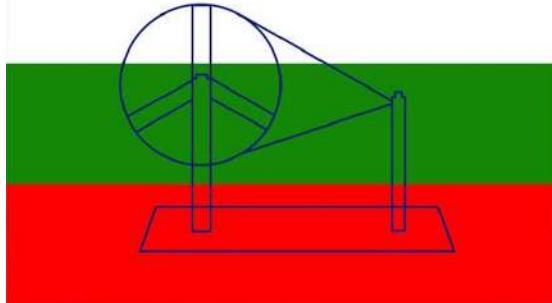
'वंदे मातरम्' झंडे के समकालीन रूपांतर



तिरंगे के विकास की कहानी



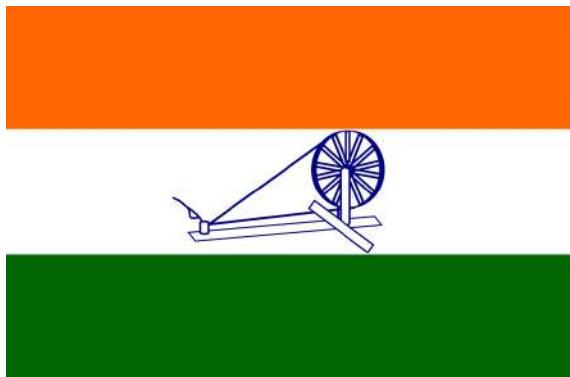
1917: स्वशासन वाला झंडा



1921: सद्भाव का प्रतिनिधित्व करने वाला झंडा

- होम रूल आंदोलन के दौरान एनी बेसेंट और बाल गंगाधर तिलक ने एक नया झंडा फहराया।
- यह झंडा ब्रिटिश साम्राज्य के भीतर भारतीय स्वशासन के लिए प्रयास का प्रतीक था (1917)।
- बेजवाड़ा (अब विजयवाड़ा) कांग्रेस सत्र में, पिंगली वेंकैया ने महात्मा गांधी को झंडे का एक प्रारूप भेंट किया जिसमें सामुदायिक सद्भाव के लिए तीन धारियाँ और प्रगति का प्रतीक एक घूमता हुआ पहिया बना हुआ था (1921)।

तिरंगे के विकास की कहानी



1931: वर्तमान झंडे का पहला प्रारूप



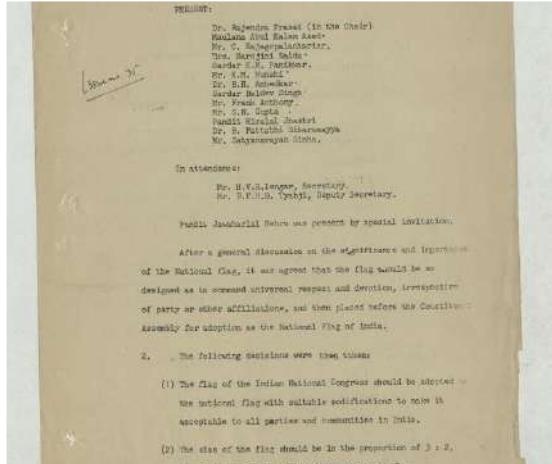
पिंगली वेंकया पर जारी डाक टिकट (2009)

- 1931 में थोड़े से संशोधन के साथ पिंगली वेंकया के झंडे को अपनाने का औपचारिक प्रस्ताव पारित किया गया।
- यह झंडा, वर्तमान ध्वज का अग्रदूत, केसरिया, सफेद और हरा था जिसके केंद्र में महात्मा गांधी का चरखा था।
- केसरिया साहस का प्रतीक है, सफेद शांति का प्रतीक है, और विकास का प्रतीक है।

स्वतंत्र भारत के ध्वज का अंगीकरण



1947 : वर्तमान झंडा



पहली बैठक की
अभिलेखीय टिप्पणियाँ

- भारत की संविधान सभा के राष्ट्रीय झंडे की तदर्थ समिति की पहली बैठक 10 जुलाई 1947 को हुई।
- 22 जुलाई 1947 को संविधान सभा ने स्वतंत्र भारत के झंडे को आधिकारिक तौर पर अपनाया।
- चरखे का स्थान समाट अशोक के सत्य और जीवन के प्रतीक धर्म चक्र ने ले लिया। यह झंडा तिरंगे के नाम से जाना गया।

आज का तिरंगा

- भारतीय राष्ट्रीय ध्वज एकता के प्रतीक के रूप में खड़ा है, जो राष्ट्र के विविध सांस्कृतिक ताने-बाने और इसके मूल्यों को दर्शाता है।
- केसरिया पट्टी साहस, बलिदान और सत्य की खोज का प्रतीक है, जो व्यक्तिगत लाभ से ऊपर उठकर मानवता की सेवा का आहवान करती है।
- सफेद पट्टी शांति, पवित्रता और ज्ञान का प्रतिनिधित्व करती है, जो समाज में सद्भाव को बढ़ावा देती है।
- हरी पट्टी विकास, उर्वरता और प्रकृति की उदारता का प्रतीक है, जो सतत प्रगति के प्रति प्रतिबद्धता को बढ़ावा देती है।
- अशोक चक्र, अपनी 24 तीलियों के साथ, शाश्वत गति, धार्मिकता, न्याय, समानता और नैतिक दृढ़ता का प्रतीक है, जो देश का एक समतापूर्ण समाज की ओर मार्गदर्शन करता है।

भाग

दो

भारतीय स्वतंत्रता संग्राम में
तिरंगे की भूमिका

अवज्ञा का प्रतीक



- 1942: भारत छोड़ो आंदोलन के दौरान, 'राष्ट्रीय ध्वज' ब्रिटिश औपनिवेशिक शासन के खिलाफ अवज्ञा का एक शक्तिशाली प्रतीक और भारतीय लोगों के लिए एकता का चिह्न बन गया।
- प्रदर्शनकारियों ने इसे जुलूसों के दौरान अपने साथ रखा, सार्वजनिक भवनों पर फहराया और ब्रिटिश औपनिवेशिक अधिकारियों की अवज्ञा में इसका प्रयोग किया।
- ब्रिटिश औपनिवेशिक सरकार ने भारतीय राष्ट्रीय ध्वज के प्रदर्शन पर कठोर प्रतिक्रिया दी, इसे फहराने वाले व्यक्तियों को गिरफ्तार किया और इसके प्रदर्शन को दबाने के लिए हिंसा का इस्तेमाल किया।

असम के गोहपुर थाने पर झंडा फहराने के प्रयास में कनकलता की मृत्यु



- 16 वर्षीय स्वतंत्रता सेनानी कनकलता बरुआ ने 20 सितंबर 1942 को भारत छोड़ो आंदोलन के दौरान एक जुलूस का नेतृत्व किया, जिसका लक्ष्य गोहपुर थाने पर तिरंगा फहराना था।
- जब रेबती महान सोम, जो पुलिस स्टेशन के प्रभारी थे, ने बरुआ और उनके अनुयायियों को रुकने के लिए कहा, तो बरुआ ने जवाब दिया, "तम अपना कर्तव्य करो और मैं अपना कर्तव्य निभाऊंगा," और आगे बढ़ गईं।
- जुलूस आगे बढ़ने लगा और पुलिस ने फायरिंग शरू कर दी। कनकलता गंभीर रूप से घायल हो गई और बच न सकीं।

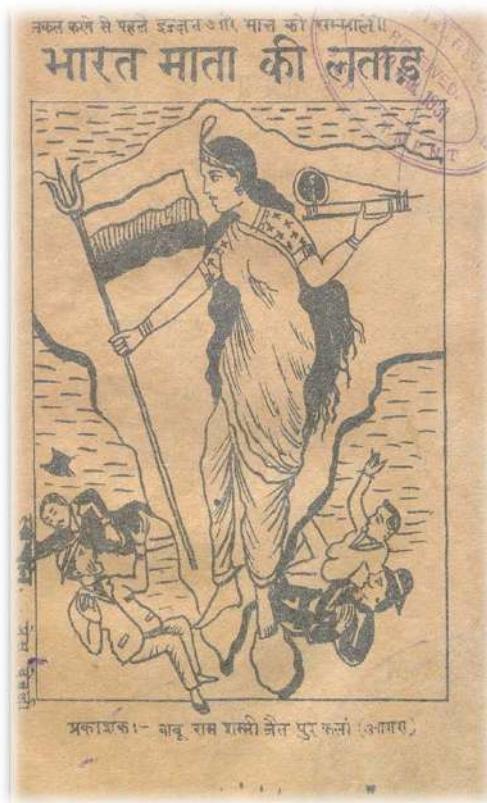
पटना में तिरंगा फहराने की कोशिश में सात छात्रों की गोली मारकर हत्या



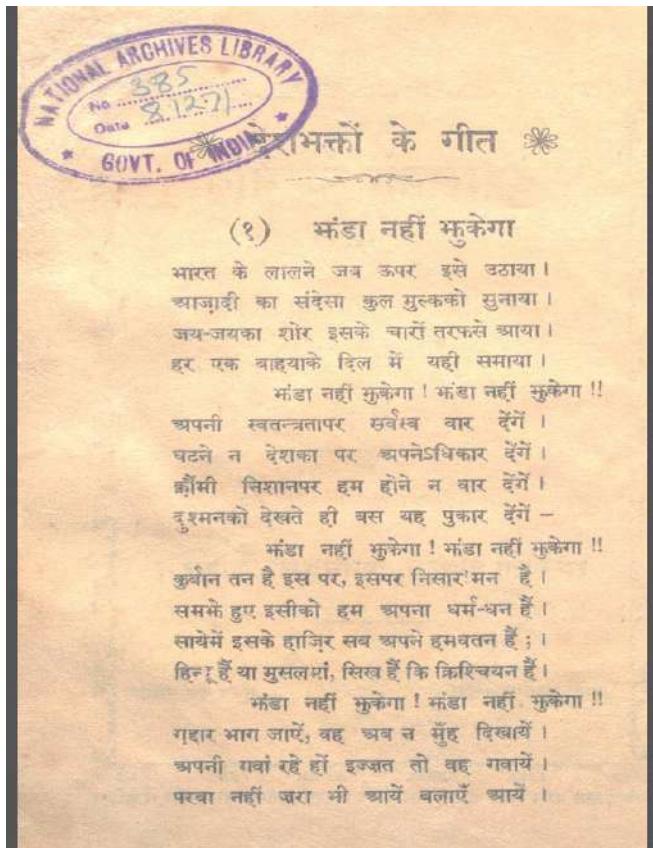
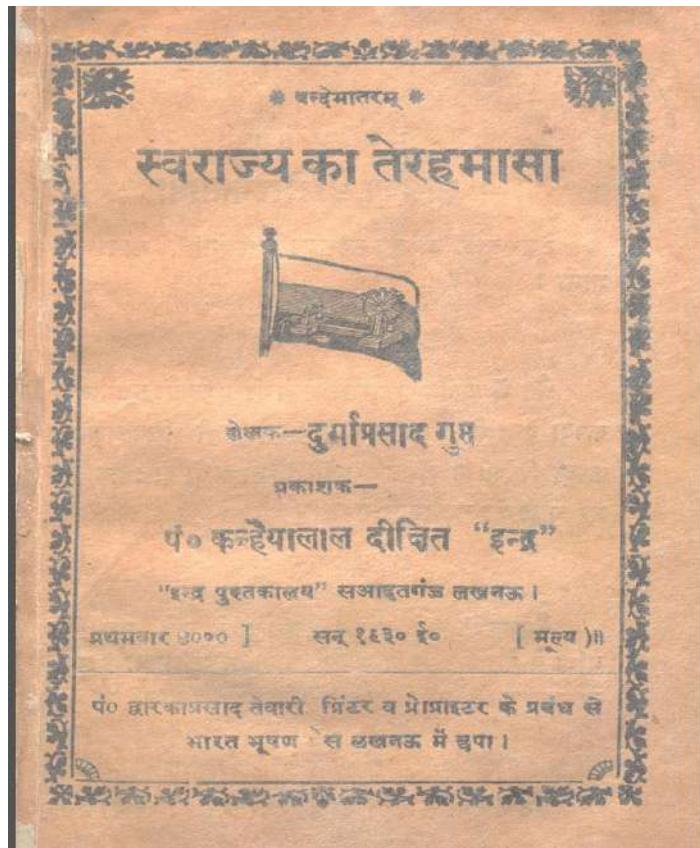
- 1942 में भारत छोड़ो आंदोलन के चरम के दौरान, स्वतंत्रता सेनानियों श्री कृष्ण सिन्हा और डॉ. अनुग्रह नारायण को पटना में राष्ट्रीय ध्वज फहराने का प्रयास करते समय गिरफ्तार कर लिया गया था।
- गिरफ्तारी की प्रतिक्रिया के रूप में, सात युवा छात्रों के एक समूह ने पटना में जबरदस्ती राष्ट्रीय ध्वज फहराने का फैसला किया।
- उनकी बेरहमी से गोली मारकर हत्या कर दी गई। समूह में उमाकांत प्रसाद सिन्हा, रामानंद सिंह, सतीश चंद्र झा, जगतपति कुमार, देवीपद चौधरी, राजेंद्र सिंह और रामगोविंद सिंह शामिल थे।

एक सांस्कृतिक प्रतीक

- राष्ट्रीय ध्वज एक सांस्कृतिक प्रतीक भी बन गया, जो गीतों, साहित्य और कला में बार-बार देखा गया, जिसने स्वतंत्रता संग्राम और स्वतंत्र भारत की कल्पना के साथ इसके जु़़ाव को मजबूत किया।
- औपनिवेशिक शासन के तहत ऐसे साहित्य पर प्रतिबंध लगा दिया गया था।
- देर सारे प्रतिबंधित साहित्य को गुप्त रूप से प्रसारित किया गया। इनमें से कई रचनाओं में झंडे के दृश्य और उल्लेख थे।
- बाबूराम शर्मा की प्रतिबंधित पुस्तक 'भारत माता की लताड़' के कवर पेज पर राष्ट्र को एक माता (भारत माता) के रूप में दर्शाया गया है, जिसके एक हाथ में राष्ट्रीय ध्वज और दूसरे में चरखा है, और औपनिवेशिक शक्ति उसके पैरों के नीचे कुचली हुई है।



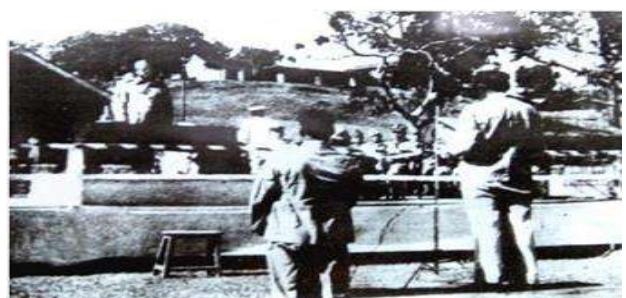
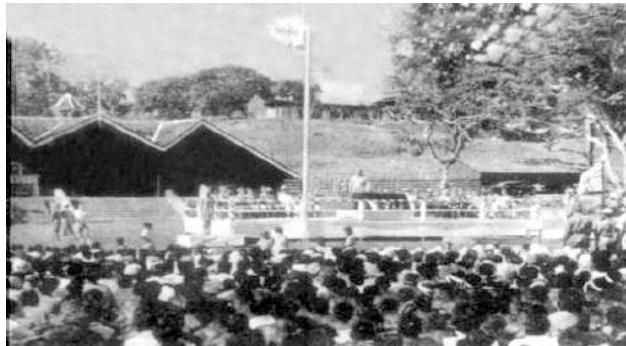
प्रतिबंधित साहित्य में राष्ट्रीय झंडा



प्रतिबंधित पुस्तक का कवर पेज, जिसका शीर्षक है 'स्वराज्य का तेरहमासा' (स्वतंत्रता के 13 महीने), राष्ट्रीय ध्वज की एक छवि के साथ (केंद्र में एक चरखे के साथ, जैसा कि वर्ष 1931 में अपनाया गया था)

यह पन्ना 1932 में सत्येन्द्र नाथ की पुस्तक 'देशभक्तों के गीत' से पहली देशभक्ति कविता दिखाता है, जिसका शीर्षक है: 'झंडा नहीं झुकेगा'। इस पुस्तक में 18 देशभक्ति कविताएँ हैं और इसका अंत 'चरखे की आरती' के साथ होता है।

भारतीय धरती पर पहला ध्वजारोहण



- 1943: आजाद हिंद की अनंतिम सरकार के प्रमुख के रूप में नेताजी ने 29 से 31 दिसंबर 1943 तक अंडमान और निकोबार द्वीप समूह का दौरा किया।
- इस झंडे को नेताजी सुभाष चंद्र बोस की भारतीय राष्ट्रीय सेना (INA) और 1943 में स्थापित आज़ाद हिंद की अनंतिम सरकार द्वारा अपनाया गया था, जो स्वतंत्रता के लिए भारत की मांग की व्यापक अंतरराष्ट्रीय मान्यता का प्रतीक था।
- 30 दिसंबर 1943 को उन्होंने पहली बार भारतीय धरती पर राष्ट्रीय तिरंगा फहराया और एक सामूहिक रैली को संबोधित किया।

इतिहास का एक टुकड़ा



फोर्ट सेंट जॉर्ज, चेन्नई में प्रदर्शित तिरंगा



आर्मी बैटल ऑनर्स मेस, दिल्ली में प्रदर्शित तिरंगा

- 1947 में स्वतंत्रता दिवस से संबंधित समारोहों और उत्सवों में इस्तेमाल किए गए झंडों का इतिहास में एक विशेष स्थान है।
- ऐसा ही एक झंडा फोर्ट सेंट जॉर्ज, चेन्नई में प्रदर्शित है। यह झंडा 15 अगस्त 1947 को फोर्ट सेंट जॉर्ज में फहराया गया था और हाल ही में इसका संरक्षण किया गया है।
- स्वतंत्र भारत के पहले प्रधान मंत्री द्वारा फहराया गया पहला राष्ट्रीय ध्वज, आर्मी बैटल ऑनर्स मेस, नई दिल्ली के अधिकार में बताया जाता है।

आजाद भारत का पहला डाक टिकट तिरंगे के साथ

#MomentsWithTiranga



**The first stamp of the
Independent India with Tiranga on it**

भाग

तीन

हर घर तिरंगा अभियान

हर घर तिरंगा : जन आंदोलन + जनभागीदारी



- हर घर तिरंगा अभियान के माध्यम से तिरंगे की विरासत को जन-जन तक पहुँचाने के प्रयासों को नई गति मिली है।
- आज़ादी का अमृत महोत्सव के तत्वावधान में शुरू किया गया हर घर तिरंगा सभी की व्यापक भागीदारी के साथ एक जन आंदोलन बन गया है। .
- इसने 1.4 अरब से अधिक भारतीयों के दिलों में तिरंगे के साथ व्यक्तिगत जुड़ाव के बीज बोए हैं।
- हर घर तिरंगा ने हमारे स्वतंत्रता सेनानियों और बहादुरों के योगदान और बलिदान का सामूहिक रूप से सम्मान करने के साथ-साथ हमें अपने इतिहास के करीब ला दिया है।

देशभक्ति का उमड़ता हुआ जोश



- इसने कई स्वयं सहायता समूहों, कारीगरों, झंडा निर्माताओं, कपड़ा विक्रेताओं और अन्य लोगों को नया उद्देश्य और उत्साह दिया है, जिन्हें झंडों की बढ़ती मांग से काफी लाभ हुआ है।
- इससे देश के डाक विभाग के साथ गहरे जुड़ाव की एक नई भावना भी आई है, जो यह सुनिश्चित करने में सहायक रही है कि भारत के सभी शहरों और गांवों में झंडे उपलब्ध हों और वितरित किए जाएं।
- हर घर तिरंगा के दौरान बनाए गए विश्व रिकॉर्ड और तिरंगा यात्राओं और रैलियों में जन भागीदारी हर जगह भारतीयों के देशभक्ति के उत्साह के सामूहिक प्रसार का प्रमाण है।

सभी हितधारकों की सक्रिय भागीदारी के साथ राज्यों और केंद्र शासित प्रदेशों में समारोह



तिरंगे के रक्षकः सशस्त्र सेनाओं का राष्ट्र को सलाम



2024 में भारतीय सशस्त्र बल ने पूरे गर्व के साथ हर घर तिरंगा मनाया। एकता के इन शक्तिशाली कार्यों में वही भावना झलकती है जो ऑपरेशन सिंदूर में दिखाई दी थी, जहाँ ध्वज को साहस और सम्मान के साथ आगे बढ़ाया गया।

हम हर घर तिरंगा अभियान का हिस्सा बनने
और तिरंगे के प्रति देशवासियों के मन में नई
ऊर्जा का संचार करने के लिए सभी को
धन्यवाद देते हैं!

नई दिल्ली, भारत
अगस्त 2025